International Journal of Advanced Educational Research
www.educationjournal.org
ISSN: 2455-6157
Received: 09-08-2021, Accepted: 24-08-2021, Published: 09-09-2021
Volume 6, Issue 5, 2021, Page No. 1-2

विद्यार्थियों के अधिगम उपलब्धि पर रचनात्मक उपागम का प्रभाव

डॉ. अखिलेश सिंह भदौरिया[1], ऋतु सिंह परिहार[2]
[1] अतिथि संकाय, विभाग एपीएसयू रीवा, मध्य प्रदेश, भारत
[2] भोज मुक्त विश्वविद्यालय भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
भारत एक ऐसा देश है जिसकी अधिकांश आबादी गॉवों में निवास करती हैं इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षा के रचनावाद का समावेश अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं शिक्षा में मल्टीमीडिया की संकल्पना को नकारा नहीं जा सकता किन्तु इसे रचनात्मक उपागम के एक अंश के रूप में ही स्वीकार करना होगा। अमीर वर्ग का कान्सट्रक्टिव एप्रोच मल्टीमीडिया हो सकता है किन्तु गरीब वर्ग का कान्सट्रक्टिव एप्रोच मल्टीमीडिया नही हो सकता अर्थात् आस–पास के वातावरण में उपस्थित संसाधनो से कान्सट्रक्टिव एप्रोच होकर और खासकर मल्टीमीडिया का कम्प्यूटर रूप तो गरीब क्षेत्र की कान्सट्रक्टिव एप्रोच नही हो सकता हैं गरीब वर्ग की मल्टीमीडिया उसके आस–पास के वातावरण में उपस्थित संसाधनो को ही कान्सट्रक्टिव एप्रोच के रूप में स्वीकार कर शिक्षा की व्यवस्था करना सर्वाधिक उपयुक्त होगा। इस तथ्य के दृष्टिगत रखते हुए शोधार्थी द्वारा कान्स्ट्रक्टिव एप्रोच का उपयोग अध्यापन में करके इसका प्रभाव देखा गया है। शोधार्थी द्वारा यह अध्ययन ग्रामीण क्षेत्र की पॉच पूर्व माध्यमिक विद्यालयों के 50 विद्यार्थियों पर कान्स्ट्रक्टिव एप्रोच का उपयोग करते हुए अध्यापन कार्य किया गया है। 50 ऐसे छात्रों को भी अध्ययन में शामिल किया गया, जिन्हे परम्परागत विधि के अर्थात् किसी भी प्रकार की सहायक सामग्री का उपयोग न करते हुए अथवा किसी भी प्रकार के कान्स्ट्रक्टिव एप्रोच का बिना सहारा लिए हुए अध्यापन कार्य शोधार्थी द्वारा शोध उपकरण के रूप में स्वनिर्मित उपल्बिध का उपयोग किया गया है। अध्ययन का परिणाम यह परीक्षण रहा कि कान्स्ट्रक्टिव उपागम का उपयोग अध्ययन हेतु किया गया जिन विद्यार्थियों के लिए किया गया उनकी अधिगम उपलब्धि उन विद्यार्थियों से बेहतर पाई गई जिन्हे कन्सट्रक्टिव एप्रोच के बिना अध्यापन कार्य किया गया है। के लिए किया गया उनकी अधिगम उपलब्धि उन विद्यार्थियों से बेहतर पाई गई जिन्हे कान्स्ट्रटिव एप्रोच के बिना उध्यापन कार्य किया गया है।

मूल शब्दः कास्ट्रक्टिव, विद्यार्थी, शिक्षक, अधिगम उपलब्धि

प्रस्तावना
शिक्षा में कान्स्ट्रक्टिव एप्रोच शब्द निर्मिततवाद का प्रयोग सर्वप्रथम जीन पियाजे ने किया था। पियाजे के अनुसार वातावरण में क्रिया से ही बालक का सामाजिक विकास या समाजीकरण होता है। समाजीकरण अर्थात् सामाजिक विकास एक सीखना है। और सबसे उपयुक्त सीखना नही हो सकता है जो आस–पास के वातावरण में भी वातावरण में उपस्थित संसाधनों के बीच में रहकर उपयुक्त क्रिया द्वारा सीखा जाता है। इसी को पियाजे वर्तमान निर्मित वाद कहा है। वर्तमान मे इस उपागम का उपयोग शिक्षा में बहुतायत में किया जाने लगा है। चूकि आस–पास के वातावरण और आस–पास के वातावरण में उपस्थित वस्तुओं, संसाधनों को बच्चा अच्छे से पहचानता है, इन वस्तुओं के प्रति बच्चा स्पष्ट सम्प्रत्यय रखता है। अतः कान्स्ट्रक्टिव एप्रोच से बच्चा किसी भी प्रकार की सीखने की क्रिया को मौलिक रूप से सीख सकने में सक्षम होता है।
शोधार्थी द्वारा कान्स्ट्रक्टिव उपागम का विद्यार्थियों की अधिगम उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। इसके लिए शाधार्थी द्वारा सिर्फ एक उद्देश्य को चिंहित किया गया है जो निम्नवत् है।

शोध का उद्देष्यः शिक्षण प्रक्रिया में कान्स्ट्रक्टिव उपागम उपयोग का विद्यार्थियों की अधिगम उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाः शिक्षक प्रक्रिया में कान्स्ट्रक्टिव उपागम का उपयोग करने अथवा कान्स्ट्रक्टिव उपागम का उपयोग न करने में विद्यार्थियों की अधिगम उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं आता है।

परिसीमनः मध्य–प्रदेश के रीवा जिले के मऊगंज विकास खण्ड के 10 शासकीय प्राथमिक विद्यालय।

न्यादर्षः प्रतयेक विद्यालय से 20–20 विद्यार्थी अर्थात कुल 200 विद्यार्थी जिसमें से प्रत्येक विद्यालय से 10–10 विद्यार्थियों को कान्स्ट्रक्टिव एप्रोच का उपयोग करते हुए एवं 10–10 विद्यार्थियों को बिना कान्स्ट्रक्टिव एप्रोच के उपयोग के अर्थात् 100 विद्यार्थियों का ऐसा समूह जिसे कान्स्ट्रक्टिव एप्रोच का उपयोग करते हुए एवं 100 विद्यार्थियों का ऐसा समूह जिसे कान्स्ट्रक्टिव एप्रोच के बिना उपयोग किये हुए शिक्षण कार्य किया गया है। सभी विद्यार्थी कक्षा–3 के है।

अनुसंधान विधिः प्रयोगात्मक विधि

उपकरणः स्वनिर्मित उपलब्धि परीक्षण जिसमें गणित एवं पर्यावरण के प्रश्नों को समाहित किया गया

अनुसंधान में प्रभावी चरः अनुसंधान में स्वतंत्रचर के रूप में शिक्षक द्वारा उपयोग की गई कान्स्ट्रक्टिव एप्रोच तथा आश्रितचर के रूप में निद्यार्थियों की अधिगम उपलब्धि है।

निष्कर्षः निम्न सारणी से शोध के निष्कर्ष को प्रस्तुत किया गया है

तालिका 1

विद्यार्थी समूह	विद्यार्थीयों की संख्या	पूर्णांक	प्राप्ताकों का मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रृटि	क्रांतिक अनुपात	d.f.	परिणाम
कान्स्ट्रक्टिव एप्रोच का उपयोग करते हुए पढाये गये विद्यार्थी	100	25	7.96	4.46	0.45	8.57	198	0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक
कान्स्ट्रक्टिव एप्रोच का उपयोग किये बिना पढ़ाये गये विद्यार्थि	100	25	11.91	4.47				

कान्स्ट्रक्टिव एप्रोच का उपयोग करते हुए पढाये गये विद्यार्थियों के प्राप्तांको का मध्यमान 7.96 तथा कान्स्ट्रक्टिव एप्रोच का उपयोग किये बिना पढाये गये विद्यार्थियों के प्राप्तांको का मध्यमान 11.91 है। स्वतंत्रता की कोटि 198 पर सार्थकता के लिए t–सारणी में मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.60 है तथा प्रदत्तों के सांख्कीय विश्लेषण द्वारा प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 8.57 है। अतः यहॉ पर शून्य परिकल्पना का कोई अस्तित्व नहीं है और सिद्ध होता है कि कान्स्ट्रक्टिव एप्रोच का उपयोग करते हुए पढाये गये विद्यार्थियों तथा कान्स्ट्रक्टिव एप्रोच का उपयोग किये बिना पढाये गये विद्यार्थियों के अधिगम उपलब्धि में सार्थक अन्तर हैं अर्थात् शोधार्थी की परिकल्पना निरसित होती है।

निष्कर्ष

अध्ययन के कान्स्ट्रक्टिव एप्रोच का उपयोग करते हुए जिन छात्रों को पढाया गया है उनकी अधिगम उपलब्धि उन छात्रों से बेहतर पायी गयी है जिन्हें कान्स्ट्रक्टिव एप्रोच का उपयोग किये बिना पढाया गया है।

सुझााव

शिक्षक को कक्षा में कान्स्ट्रक्टिव एप्रोच का उपयोग करते हुए शिक्षण कार्य कराना चाहिए। शिक्षक को स्वयं का कान्स्ट्रक्टिव एप्रोच का उपयोग कर बच्चों का दिखाना चाहिए और उसके बाद बच्चों से कान्स्ट्रक्टिव एप्रोच का उपयोग कक्षा में करवाना चाहिए। गृह कार्य को भी कान्स्ट्रक्टिव एप्रोच से ही करने हेतु निर्देशित और अभिप्रेरित करना चाहिए।

संदर्भ

1. जोशी, बी. (1987) ''ए स्टडी इफेक्टिवनेस ऑफ स्कूल टेलीविजन प्रोग्राम्स इन साइंस ऐट द सेकेण्डरी स्कूल लेबल'' द महाराजा सायाजी राव युनिवर्सिटी ऑफ बडोदा, पी.एच.डी., एजुकेशन इन फिफ्थ सर्वे ऑफ एजुकेशन रिसर्च, वल्यूम z, एम.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली पृ.क. 1376.
2. कौशलेश, मनीषा तथा अन्य (2011) ''विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति पर मल्टी मीडिया शैक्षिक उपागमों का प्रभाव'' शिक्षा के नवीन प्रवृत्तियॉ, ए.पी.एच. पब्लिशंग कार्पोरेशन 4435–36/7 नई दिल्ली, पृ क्र. 54.